नजानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव



८



चलो, चलें

राडुगा प्रकाशन · मास्को



नज़ानू की कहानियां

निकोलाई नोसोव

८

चलो, चलें

अनुवादक:
अचला जैन

चित्रकार:
बोरीस कलऊशिन



रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस(प्रा)लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001





आख़िरकार गुब्बारे में गर्म हवा भरने का काम पूरा हुआ। जानू ने बर्तन हटा देने को कहा और रबड़ की नली को डोरी से बांध दिया, ताकि गर्म हवा गुब्बारे से बाहर न निकल जाये। इसके बाद उसने सबको झाबे में बैठने का आदेश दिया। सबसे पहले झाबे में चढ़ा जल्दबाज़, उसके पीछे गुलगुला जो दूसरे बौनों के सिरों पर गिरते-गिरते बचा। वह थोड़ा मोटा था और उसकी जेबों में बहुत-सी चीज़ें ठूंस-ठूंसकर भरी हुई थीं – किसी में चीनी भरी थी तो किसी में बिस्कुट। ऊपर से उसने रबड़ के जूते पहन लिये थे और हाथों में छाता ले लिया था। सब ने मिलकर गुलगुला को झाबे में बिठा दिया, उसके पीछे बाक़ी बौने भी चढ़ने लगे। शरबतिया झाबे के चारों ओर भाग-भागकर सबको बिठाने लगा।

"बैठो, बैठो," उसने कहा, "आराम से बैठ जाओ। गुब्बारे में सबके लिए जगह है।"

"तुम भी बैठो," सबने उससे कहा।

"बैठ जाऊंगा," शरबतिया ने कहा, "पहले तुम लोग तो बैठो।"

उसने मदद के लिए लोगों का हाथ पकड़कर उन्हें चढ़ने में सहारा दिया।

आखिर में सभी झाबे में चढ़ गये। बस एक शरबतिया नीचे रह गया।

"तुम क्यों नहीं बैठ रहे हो?" सबने उससे पूछा।

"शायद अच्छा यही हो कि मैं न आऊं?" शरबतिया ने कहा, "मैं बहुत मोटा हूं। मेरे बिना ही वहां इतनी घिचपिच है। मुझे डर है कि लोग ज़रूरत से ज़्यादा हो जायेंगे।"

"डरो मत, लोग ज़्यादा नहीं होंगे।"

"नहीं, भाइयो, तुम लोग मेरे बिना ही उड़ो। मैं तुम लोगों की यहीं राह देखूंगा। मैं तुम लोगों को तंग क्यों करूं?"

"किसी को तुम तंग नहीं करोगे। बैठो। अगर सबने उड़ने की ठानी है तो एकसाथ ही उड़ेंगे," जानू ने कहा।

शरबतिया न चाहते हुए भी झाबे में चढ़ गया, और तभी अचानक एक ऐसी घटना हुई, जिसके बारे में किसी ने सोचा भी नहीं था: झाबा गुब्बारे समेत ज़मीन पर उतर आया।

"बस, उड़ लिये!" चारदीवारी पर बैठा भुनगा हंस पड़ा।





"तुम हंस क्यों रहे हो? यहां हमारे ऊपर मुसीबत आ पड़ी है, और यह है कि हंस रहा है," दलदलिया ने कहा।

"कोई मुसीबत नहीं आयी है," शीशू ने कहा। "यह उड़न-गुब्बारा बस पंद्रह बौनों को उठा सकता है, सोलह को नहीं।"

"मतलब अब नहीं उड़ेंगे?" दलदलिया ने पूछा।

"किसी एक को छोड़ना पड़ेगा, तब उड़ पायेंगे," शीशू ने कहा।

"शायद नजानू को छोड़ दें," मक्खी ने कहा।

शरबतिया ने, जिसे गुब्बारे में उड़ने से डर लग रहा था, ख़ुश होकर कहा:

"अब देखो, मैंने तो पहले ही कहा था कि लोग ज़्यादा हो जायेंगे। अच्छा हो अगर मैं उतर जाऊं।"

उसने उतरने के लिए पैर भी उठा लिया, पर तभी जानू ने रेत भरी एक बोरी को झाबे में से उठाकर फेंक दिया। गुब्बारे का बोझ हल्का हो गया और वह फिर से ऊपर उठ गया। अब जाकर ही सबकी समझ में आया कि जानू ने रेत भरी बोरियां झाबे में रखने को क्यों कहा था। सभी तालियां बजाने लगे। जानू ने हाथ ऊपर उठाकर सभी बौनों से चिल्लाकर कहा:

"टा-टा, भाइयो! हम लोग बहुत दूर उड़ जायेंगे! एक हफ़्ते बाद वापस लौटेंगे! टा-टा!"

"टा-टा! टा-टा! तुम्हारी यात्रा सफल हो!" बौने हाथ और टोपियां हिलाते हुए चिल्लाये।

जानू ने जेब से चाक़ू निकाला और उस रस्सी को काट दिया, जिससे झाबा पेड़











के साथ बंधा हुआ था। गुब्बारा लहराता हुआ ऊपर उठ गया, एक तरफ़ से वह पेड़ की टहनी में अटक गया, पर तभी उससे निकलकर जल्दी से ऊपर उड़ चला।

"हुर्रा!" बौने चिल्लाये, "जानू और उसके साथी ज़िंदाबाद! हुर्रा-आ!"

सभी लोग तालियां बजाने और टोपियां ऊपर उछालने लगे। छुटकियों ने खुशी से









एक दुसरे को गले से लगा लिया। मक्खी और बटन ने तो एक दूसरी को चूम भी लिया और डेज़ी रो पड़ी।

इस बीच गुब्बारा ऊपर ही ऊपर उठता गया। हवा ने उसे एक ओर मोड़ दिया। जल्द ही वह एक छोटे-से बिंदु में बदल गया, जो नीले आसमान में मुश्किल से ही दिखायी दे रहा था। शीशू घर की छत पर चढ़कर दूरबीन से बिंदु देखने लगा। उसके साथ छत के बिल्कुल किनारे खड़ा था कवि गुलदस्ता। सीने पर हाथ बांधकर वह बड़ी उमंग से देख रहा था। लगता था कि वह किसी सोच में पड़ा हुआ है। अचानक उसने अपने हाथ फैला दिये और ज़ोर से चिल्ला उठा:

"कविता! सुनो कविता!"



चारों ओर एकदम से शांति छा गयी। सभी सिर उठाकर गुलदस्ता की ओर देखने लगे।

"कविता! अभी कविता होगी!" बौनों ने फुसफुसाकर कहा।

गुलदस्ता थोड़ी देर और रुका रहा कि पूरी शांति हो जाये। फिर उड़ते हुए गुब्बारे की ओर हाथ उठाकर, थोड़ा-सा खांसकर, उसने फिर से कहा:

"कविता!"

और कविता पढ़ने लगा, जो उसने अभी-अभी रची थी:

उड़ा गगन में ग़ुब्बारा भारी भरकम – अजब कारीगरी!
ऐसे ही यह थोड़े हो जाता है, हवा है उसमें ख़ूब भरी
बौनों के पंख भले न हों उड़नेवाली चिड़ियों जैसे
लेकिन चाहे तो उड़ भी सकते हैं वे बिल्कुल वैसे,
काम कठिन हो चाहे जितना, पर हो जाता है आसान,
थोड़ी-सी बस अकल लगाओ, कुछ सूझ-बूझ औ' कुछ ज्ञान!



चारों ओर एकदम से शोर होने लगा! सभी तालियां बजाने लगे। छुटके गुलदस्ता को अपने हाथों में उठाकर छत से घसीटकर घर में ले आये और छुटकियों ने फूलों की पत्तियां तोड़कर गुलदस्ता की ओर फेंकनी शुरू कर दीं। उस दिन गुलदस्ता की इतनी धूम मच गयी, जैसे ख़ुद उसने उड़न-गुब्बारे को सोच निकाला हो, और उसमें आसमान में उड़ गया हो। सबने उसकी कविता रट ली और सड़कों पर गाने लगे।

उस दिन बड़ी देर तक, जहां देखो वहीं उसकी कविता सुनाई दे रही थी:

काम कठिन हो चाहे जितना, पर हो जाता है आसान,
थोड़ी-सी बस अकल लगाओ, कुछ सूझ-बूझ औ' कुछ ज्ञान!



Н. Носов
В ПУТЬ
На языке хинди

N. Nosov
UP IN THE AIR IN A BALLOON
in Hindi



सोवियत संघ में प्रकाशित





ISBN 5-05-000982-0
ISBN 5-05-000984-7